जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ७ वा ❖ मार्च २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात — पान नं.

- श्री हस्तिनापुर तीर्थ — १५
- गच्छाधिपती आचार्य भगवंत दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा. — १९
- आचार्य नरदेवसागर सूरिश्वरजी — २०
- संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागरजी — २१
- आचार्य श्री विद्यासागरजी संल्लेखना — २४
- वर्षीतप धारणा-विधी, पुणे — २५
- कव्हर तपशील — २६
- श्री. कांतिलालजी ओसवाल जीतो अपैक्स के प्रेसिडेंट — ३१
- मोक्ष मार्ग के २१ कदम : सौजन्य सृजनता — ३५
- शील की सामर्थ्यता — ३९
- जीवन बोध : आग्रही मित्र — ४०
- बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन — ४२
- सुविचार — ४३
- घर में रह, सब कुछ सह — ५५
- मंत्राधिराज प्रवचनकार — ४७
- नफरत V/S प्यार — ४९
- पासवर्ड — ५९
- प्रशंसा — ६०
- जिन शासन के चमकते हीरे :
  - ✲ श्री आषाढ़ाचार्य — ६१
  - ✲ प्रियंकर नृपति — ६२
- सूर्यदत्त जीवन गौरव व राष्ट्रीय पुरस्कार — ६४
- जीतो - जे पॉइंट — ६७
- सम्यगज्ञान : एक अलौकिक दर्पण — ६९
- चला, आनंदाचे रोप लावू या — ७०
- हास्य जागृती — ७२
- ''इटस् ओके'' आनंदाची गुरुकिल्ली — ७३
- जाग — ७४
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा — ७४
- वैराग्य वाणी — ७५
- वाणी का अनमोल रत्न — ७७
- वर्धमान महावीर — ७७
- श्री. सतीशजी बनवट - पुरस्कार — ८३
- श्री. विशालजी चोरडिया - पुरस्कार — ८३
- आनंद विहारधाम - वर्पेमळा, कळंब — ८३

● एच.व्ही. देसाई आय हॉस्पिटल, पुणे	८४	● प्रवीण मसाले ट्रस्ट – शाळानां मदत	८९
● सुहाना स्पायसेस् वेअर हाऊास – पुरस्कार	८५	● नवकार आर्ट फौऊंडेशन, नाशिक	८९
● डॉ. दिलीप धींग – पुरस्कार	८५	● श्री. रमेशचंद्रजी बाफना, अहमदनगर	९५
● नामको हॉस्पिटल, नाशिक	८६	● ज्येष्ठ नागरिक संघ, पुणे	९१
● एच.एन.डी. बोर्डिंग, पुणे	८६	● व्रतमहत्ता	९१
● तातेड रक्तदान शिबीर – निगडी	८७	● डॉ. सुधा कांकरिया – अहमदनगर	९२
● डायग्नोपिन सुरभी हॉस्पिटल, अहमदनगर	८७	● प्रकृति का नियम	९४
● रक्तदान शिबीर – वडगांव मावळ	८८	● सुरक्षा	९७
● श्री. गिरीशजी पारख – लोणावळा	८८	● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

● वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.

● आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

श्री आदिनाथ भगवान वर्षीतप पारणा स्थल एवम् १२ कल्याणक भूमी श्री हस्तिनापुर तीर्थ

तीर्थाधिराज

१. श्री. शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, गुलाबी वर्ण, लगभग ९० सें. मी. (श्वे. मन्दिर) ।

२. श्री शान्तिनाथ भगवान, पद्मासनस्थ, श्वेत वर्ण (दि. मन्दिर)।

तीर्थ स्थल : हस्तिनापुर गाँव में।

प्राचीनता : इस तीर्थ की प्राचीनता युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान से प्रारम्भ होती है। शास्त्रों में इसके नाम गजपुर, हस्तिनापुर, नागपुर, आसन्दीवत, ब्रह्मस्थल, शान्तिनगर कुंजरपुर आदि भी आते हैं।

भगवान आदिनाथ ने अपने पुत्र बाहुबलीजी को पोदनापुर एवं हस्तिनापुर राज्य दिए थे। पोदनापुर में बाहुबलीजी एवं हस्तिनापुर में उनकें पुत्र श्री सोमयश राज्य करते थे। सोमयश के लघु भ्राता श्री श्रेयांसकुमार ने भगवान श्री आदिनाथ को यहीं पर इक्षु रस से पारणा करवाया था। उस स्मृति में श्री श्रेयांसकुमार द्वारा यहाँ पर एक रत्नमयी स्तूप का निर्माण करवाकर श्री आदिनाथ प्रभु की चरण-पादुकाएँ स्थापित कराने का उल्लेख है। श्री आदिनाथ भगवान के पश्चात् श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान एवं श्री अर्हनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक यहाँ हुए। उनकी स्मृति में तीन स्तूप निर्मित होने का उल्लेख है। उन प्राचीन स्तूपों एवं मन्दिरों का आज पता नहीं, क्योंकि इस नगरी का अनेकों बार उत्थान-पतन हुवा है। जगह-जगह पर भूगर्भ से अनेकों प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो प्राचीनता की याद दिलाते हैं। भगवान महावीर से उपदेश पाकर यहाँ के राजा शिवराज ने जैन धर्म का अनुयायी बनकर दीक्षा अंगीकार की। उसने भगवान की स्मृति में एक स्तूप का भी निर्माण करवाया था ।

सम्राट अशोक के पौत्र राजा संप्रति द्वारा यहाँ अनेकों मन्दिर बनवाने का उल्लेख है। वि. सं. ३८६ वर्ष पूर्व आचार्य श्री यक्षदेवसूरिजी, २४७ वर्ष पूर्व आचार्य श्री सिद्धसूरिजी, वि. सं. १९९ में श्री रत्नप्रभसूरिजी (चतुर्थ), वि. सं. २३५ के लगभग आचार्य कक्कसूरिजी (चतुर्थ) आदि अनेकों प्रकाण्ड विद्वान आचार्यगण संघ सहित यहाँ यात्रार्थ पधारे थे ।

''विविध तीर्थ-कल्प'' के रचयिता आचार्य

श्री जिनप्रभसूरिजी वि. सं. १३३५ के लगभग दिल्ली से विशाल जन समुदाय सहित संघ के साथ यहाँ यात्रार्थ पधारे। उस समय यहाँ श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान, श्री अर्हनाथ भगवान एवं श्री मल्लिनाथ भगवान इन चार तीर्थंकरों के चार मन्दिर एवं एक श्री अम्बीका देवी का मन्दिर होने का उल्लेख किया है। उस समय हस्तिनापुर शहर गंगा नदी के तट पर था।

विक्रम की सतरहवीं सदी में श्री विजयसागरजी यात्रार्थ पधारे तब ५ स्तूप एवं ५ जिन प्रतिमाएँ होने का उल्लेख है। वि. सं. १६२७ में खरतरगच्छाचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी यात्रार्थ पधारे, तब यहाँ ४ स्तूपों का वर्णन किया है।

प्राचीन काल से समय-समय पर अनेकों प्रकाण्ड विद्वान दिगम्बर आचार्यगण भी यहाँ यात्रार्थ पधारने का उल्लेख है।

इस श्वेताम्बर मन्दिर का हाल में पुनः जीर्णोद्धार होकर वि. सं. २०२१ मिगसर शुक्ला १० को आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय समुद्रसुरिजी की निश्रा में प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। इस दिगम्बर मन्दिर की प्रतिष्ठा वि. सं. १८६३ में होने का उल्लेख है।

विशिष्टता

युगादिदेव श्री आदीश्वर भगवान दीक्षा पश्चात निर्जल एवं निराहार विचरते हुए ४०० दिनों के बाद वैशाख शुक्ला तृतीया के शुभ दिन यहाँ पधारे। भोली-भाली जनता दर्शनार्थ उमड़ पड़ी। राजकुमार श्रेयांसकुमार को अपने प्रपितामह के दर्शन पाते ही जाति-स्मरण-ज्ञान हुआ, जिससे आहार देने की विधि को जानकर इक्षु रस ग्रहण करने के लिए भक्ति भावपूर्वक प्रभु से आग्रह करने लगा। प्रभु ने कल्पिक आहार समझकर श्री श्रेयांसकुमार के हाथों पारणा किया। देवदुंदुभियाँ बजने लगी, जनता में हर्ष का पार न रहा। उसी दिन यहाँ से वर्षीतप के पारणे की प्रथा प्रारंभ हुई। कहा जाता है कि भगवान का इक्षु रस से पारणा होने के कारण उस दिन को (इक्षु) अक्षय तृतीया कहने लगे।

श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री कुंथुनाथ भगवान एवं श्री अर्हनाथ भगवान के च्यवन, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान ऐसे बारह कल्याणक होने का सौभाग्य इस पवित्र भूमि को प्राप्त है।

श्री मल्लिनाथ भगवान के समवसरण की रचना यहाँ पर भी हुई थी। प्रभु ने यहाँ ६ राजाओं को प्रतिबोध देकर जैन-धर्म का अनुयायी बनाया था।

श्री मुनिसुव्रतस्वामी, श्री पार्श्वनाथ एवं चरम तीर्थंकर श्री महावीर भगवान का भी यहाँ पदार्पण हुआ था। श्री पार्श्वप्रभु ने यहाँ के राजा श्री स्वयंभु को प्रतिबोध देकर जैन धर्म का अनुयायी बनाया जो दीक्षा अंगीकार करके प्रभु के प्रथम गणधर बने।

श्री भरत चक्रवर्ती से लेकर कुल १२ चक्रवर्ती हुए, जिनमें ६ चक्रवर्तियों ने इस पावन भूमि में जन्म लिया। रामायण-काल के श्री परशुरामजी का जन्म भी यहीं हुआ था। पाण्डवों-कौरवों की राजधानी थी।

भगवान श्री महावीर के पश्चात भी अनेकों प्रकाण्ड विद्वान आचार्यगण यहाँ यात्रार्थ पधारे। अनेकों संघों का यहाँ आवागमन हुआ।

अतः ऐसे महान आत्माओं के जन्म एवं पदार्पण से पवित्र हुई भूमि की महानता का किन शब्दों में वर्णन किया जाय। इस पावन भूमि में पहुँचते ही हमारे कृपालु तीर्थंकरों आदि का स्मरण हो आता है।

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा, फाल्गुन पूर्णिमा एवं वैशाख शुक्ला तृतीया को श्वेताम्बर मन्दिर में एवं कार्तिक शुक्ला अष्टमी से पूर्णिमा तक दिगम्बर मन्दिर में मेलों का आयोजन होता है।

अन्य मन्दिर

इन मन्दिरों के अतिरिक्त एक दि. मन्दिर है। यहाँ से लगभग २ कि. मी. दूर श्वे. एवं दि. समाज की अलग-अलग स्थानों पर चार-चार देरियाँ बनी हुई हैं। तीन तीर्थंकरों के कल्याणक स्थलों के स्मरणार्थ एवं मल्लिनाथ भगवान के समवसरण स्थल के स्मरणार्थ श्वे.

देरियों में प्रभु के चरण एवं दि. देरियों में स्वस्तिक स्थापित हैं। यहीं पर एक श्वे. प्राचीन स्तूप (जिसके ऊपर लघु मन्दिर का निर्माण हुवा हैं) में श्री आदिनाथ प्रभु के चरण स्थापित है। यह स्थान श्री आदिनाथ भगवान का पारणा स्थल माना जाता है। अतः श्वेताम्बर समुदाय का अक्षय तृतीया का जुलुस यहाँ आता है । एक और अष्टापद तीर्थ स्वरूप श्वे. मन्दिर का निर्माण कार्य चालू है, कहा जाता है इसकी ऊँचाई १५१ फीट होगी ।

कला और सौन्दर्य

यह स्थान अति ही प्राचीन रहने के कारण यहाँ अनेकों प्राचीन प्रतिमाएँ, सिक्के, शिलालेख एवं खण्डहर अवशेष आदि भूगर्भ से प्राप्त हुए हैं । मन्दिरों में प्राचीन प्रतिमाएँ दर्शनीय हैं।

मार्ग दर्शन

यहाँ से नजदीक का रेल्वे स्टेशन मेरठ ४० कि. मी. है, जहाँ से बस एवं टॅक्सी का साधन है । दिल्ली से मेरठ होते हुए हस्तिनापुर ११० कि. मी. है । दिल्ली से हस्तिनापुर सीधी बस सेवा उपलब्ध है । कार एवं बस मन्दिरों तक जा सकती है। निकट ही बस स्टॅण्ड हैं ।

सुविधाएँ

ठहरने के लिए सर्वसुविधायुक्त दिगम्बर एवं श्वेताम्बर विशाल धर्मशालाएँ (४०० कमरे) हैं, जहाँ भोजनशाला की भी सुव्यवस्था है ।

पेढ़ी

१. श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति,
श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर,
पोस्ट : हस्तिनापुर - २५०४०४.
जिला : मेरठ, प्रान्त : उत्तर प्रदेश

२. श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी,
पोस्ट : हस्तिनापुर - २५०४०४.
जिला : मेरठ, प्रान्त : उत्तर प्रदेश

(साभार : तीर्थ दर्शन - प्रथम खंड
श्री जैन प्रार्थना मंदिर ट्रस्ट, चेन्नई) •

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग

जैन जागृति

जैन जागृतित जाहिरात देऊन जैन समाजाशी संवाद साधा.

जैन जागृति - एप्रिल २०२४
"भगवान महावीर जन्मकल्याणक अंक"

एप्रिल २०२४ अंकासाठी २० मार्च २०२४ पर्यंत जाहिरात पाठवा.

आर्ट पेपर वर रंगीत (Colour) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ९०००/-*
१/२ पान	रु. ४८००/-*
*डिझाईन आर्टवर्क खर्च रु. ५००/-	
GST - 5% Extra.	

व्हाईट पेपरवर एका रंगात(Black & White) जाहिरात	
पूर्ण पान	रु. ४४००/-
१/२ पान	रु. २५००/-
१/४ पान	रु. १४००/-
१/८ पान	रु. ९००/-

आजच्या स्पर्धेच्या युगात जाहिरात ही अत्यावश्यक बाब झाली आहे. जैन समाजात 'जैन जागृति' हे सर्वांत प्रभावी माध्यम आहे. आपल्या व्यवसायाची जाहिरात 'जैन जागृति' मध्ये द्या. - संपादक

E-mail - jainjagruti1969@gmail.com   website - www.jainjagruti.in

गच्छाधिपति आचार्य भगवंत दौलतसागर सूरीश्वरजी म.सा. का कालधर्म

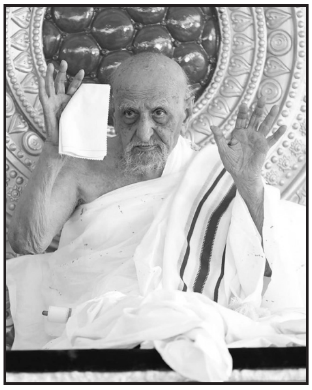

पुणे : जैन धर्म के गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराज (उम्र १०३ वर्ष) रविवार १८ फरवरी २०२४ की सुबह १०.३१ बजे समाधि पूर्वक कालधर्म हुआ । वे मुकुंदनगर के सुजय गार्डन में विराजित थे । गुरुदेव का अंतिम संस्कार १९ फरवरी को सुबह ११.३० बजे कात्रज आगम मंदिर के पास हुआ ।

पू. गच्छाधिपती श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब का जन्म महेसाणा के जेतपुर गाँव में विक्रम संवत १९७७ भादरवा वद १४ के दिन पटेल कुल में हुआ था । उनके बचपन का नाम शंकर और माता-पिता का नाम मलदासभाई और दिवालीबेन था।

जेतपुर में बचपन बिताकर शंकर अहमदाबाद में माता-पिता जैसा ही वासल्य देने वाले श्रावक दंपती के साथ में रहने लगा । दिन-प्रतिदिन जिनालय में परमात्मा के दर्शन, साधु-साध्वीजी के दर्शन, तप-जप, आराधना आदि जुड़ने के प्रसंग उनके जीवन में आते रहे जिससे शंकर के जीवन में धार्मिक संस्कारो का सिंचिन होता रहा । धन उपार्जन के लक्ष्य से गाँव छोडकर अहमदाबाद आकर बसे शंकर ने एक दिन धर्म के उपार्जन हेतु मोहमाया से भरे संसार को छोडने का निर्णय किया।

विक्रम संवत १९९५ में पूज्यपाद आगमोद्धारक श्री आनंदसागरसूरिजी महाराज के पट्टधर पूज्य मालवदेशोद्धारक आचार्य श्री चंद्रसागरसूरिजी महाराज (उस समय मुनि श्री चंद्रसागरजी म.सा.) के पट्टधर गच्छाधिपती आचार्य देव श्री देवेन्द्रसागरजी महाराज का चातुर्मास अहमदाबाद के शाहपुर मंगल पारेख के खाँचे में था । वहाँ हो रही सभी धर्म आराधनाओं में जुडकर शंकर का मन वैराग्यवासित बना । संवत १९९६ में कार्तिक वद ६ के दिन दीक्षा ग्रहण की परंतु उनके परिवारजनों ने आकर संयमी नूतन मुनि को पुन: जेतपुर ले जाकर वापिस से संसारी बना दिया था । शंकर पुन: संयम प्राप्त करने के लिए मक्कम और अडग रहा । एक दिन अवसर पाकर जेतपुर से भागकर अहमदाबाद आया और संवत १९९६ कार्तिक वद १० के दिन दिनांक ५ दिसंबर १९३९ पूज्य सागरजी महाराज साहेबजी के पास दीक्षा ग्रहण कर ली । नूतन नाम मुनि श्री दौलतसागरजी रखा गया ।

पूज्य श्री संवत २०२८ में सूरत स्थित पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री माणिक्यसागरसूरिजी की अनुमति और आशीर्वाद से पूज्यश्री ने श्रुत भक्ति करने हेतु जिनागमों की सेवा भक्ति करने का निर्णय लिया । आज तक ९ नये आगम मंदिरों के निर्माण हेतु ४५ मूल आगमों को ताम्रपत्र में अंकित तथा सटीक पचांगी आगमों की दो नकल स्वयं की निश्रा में तैयार करवायी। आगमरत्न मंजूषा का पुन: मुद्रण करवाकर दिन रात एकाग्रतापूर्वक श्रुतभक्ति करते जिनागमसेवी में नाम प्राप्त किया । विक्रम संवत २०४२ वैशाख सुद ६ के दिन उपाध्याय पद और संवत २०४४ में फागण वद ३ के दिन अहमदाबाद पालडी में आचार्य पद पर आरुढ़ हुए ।

पूज्यश्री की प्रेरणा से उज्जैन नगर में जहाँ पर श्रीपाल राजा और मयणा सुंदरी ने नवपद की आराधना की थी उस, प्राचीन स्थान का जीर्णोद्धार करवाने वाले पूज्य आचार्य श्री चंद्रसागरसूरिजी महाराज द्वारा संस्थापित श्री सिद्धचक्राराधन तीर्थ ताम्रपत्र सटीक आगम मंदिर की रचना करवायी ।

स्वयं के जन्म स्थान जेतपुर में ३ चातुर्मास कर के सैंकडो अजैनों को जैन बनाया । वहाँ के जिनालय में श्री मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिष्ठा करवायी । परमात्मा महावीर देव के समय में विधुन्माली देव द्वारा गृहस्थ जीवन में कार्योत्सर्ग मुद्रा में ध्यानरुढ़ रहे हुए प्रभुजी की प्रतिमाजी बनवायी थी । जिसकी उदयन राजर्षि द्वारा नित्य पूजा होती थी कालांतर से वह प्रतिमाजी उपलब्ध नहीं रही । उसके जैसी महावीर परमात्मा के सप्रमाण कायायुक्त पंच धातुमय दो प्रतिमाजी का निर्माण करवाया । प्रथम प्रतिमाजी पालीताणा के जंबूद्वीप मध्य में मुख्य जिनालय की भमती के पीछे नूतन शिखरबद्ध जिनालय में प्रतिष्ठित करवायी । दूसरी प्रतिमाजी पुना के कात्रज श्री वर्धमान जैन आगम तीर्थ प्रतिष्ठित करवायी ।

रात १.३० बजे हुई थी दौलतसागरजी की दीक्षा

दौलतसागरजी जैन समाज के एकमात्र ऐसे महापुरुष है जिनकी दीक्षा मध्यरात्रि को १.३० बजे हुई थी तथा भागकर दीक्षा ग्रहण की । इसके अलावा आधी रात में अकेले ही ६७ किलोमीटर का विहार किया । जन्म से पटेल होने के कारण उन्होंने पहली बार नवकार मंत्र १४ साल की उम्र में सुना था तथा १८ साल की उम्र में पहली बार गुरु भगवंत के दर्शन किए और १९ साल की उम्र में दीक्षा लेकर वैराग्यधारण किया । दौलतसागरजी को रजाहेरण आगमोद्धारक आनंदसागरजी महाराज ने प्रदान किया था । आचार्य देव ने दीक्षा के बाद प्रथम बार राई प्रतिक्रमण किया था। दीक्षित होने पर केवल 'नवकार मंत्र' और 'करेमि भंते' इन दो सूत्रों को ही जानते थे लेकिन दीक्षा के बाद सामान्य ज्ञान और क्रिया के बारे में सब कुछ सीख लिया ।

कई ग्रंथों को किया कंठस्थ

दौलतसागरजी महाराज ने १२ दिन में पंचप्रतिक्रमण, ६ दिन में ६ कर्मग्रंथ, १ दिन में दशवैकालिक सूत्र, ६ दिन में उत्तराध्यान सूत्र, ८ दिन में आचारंग सूत्र, ३६ घंटे में नवस्मरण, एक दिन में वीतराग स्तोत्र जैसे सूत्र कंठस्थ कर लिए थे तथा उन्हें ४५ आगम कंठस्थ थे । उन्होंने छट्ठ के पारणे छट्ठ पाँच विगई का त्याग कर वर्षीतप किया । दीक्षा से ३७ वर्षों तक प्रतिदिन खड़े-खड़े १००८ लोगस्स का काउसग किया और १००८ खमासमणे दिए । पूज्य श्री सागर समुदाय के ९२५ साधु-साध्वी भगवंत से अधिक के गण नायक हैं । ●

आचार्य नरदेवसागर सूरिश्वरजी म.सा. सागर समुदाय के गच्छाधिपती

सागर समुदाय के नए गच्छाधिपती के रुप में दिनांक २२ फरवरी २०२४ को आचार्य नरदेवसागर सूरिश्वरजी ने पद ग्रहण किया । आचार्य भगवंत, साधु, साध्वीजी तथा समाज के कई गणमान्य के उपस्थितीयों में अदिनाथ जैन मंदिर में शानदार समारोह आयोजित किया गया । ●

संत शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी म.सा. उत्तुंग एवम् प्रेरणादायी व्यक्तिमत्त्व

प्रेषक : पंतप्रधान श्री. नरेंद्रजी मोदी

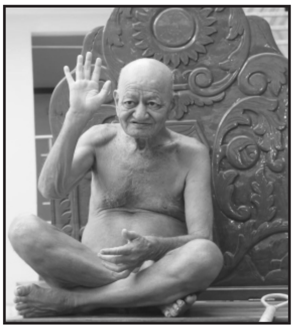

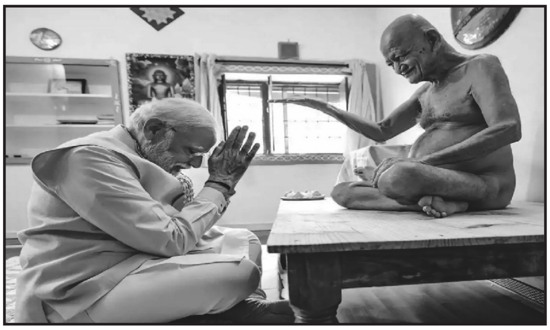

जीवन में हम बहुत कम ऐसे लोगों से मिलते हैं, जिनके निकट जाते ही मन-मस्तिष्क एक सकारात्मक ऊर्जा से भर जाता है। ऐसे व्यक्तियों का स्नेह, उनका आशीर्वाद, हमारी बहुत बड़ी पूंजी होता है। संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज मेरे लिए ऐसे ही थे। उनके समीप अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता था। आचार्य विद्यासागरजी जैसे संतों को देखकर ये अनुभव होता था कैसे भारत में आध्यात्म किसी अमर और अजस्र जलधारा के समान अविरल प्रवाहित होकर समाज का मंगल करता रहता है।

आज मुझे, उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुआ संवाद, सब बार-बार याद आ रहा है। पिछले साल नवंबर में छत्तीसगढ़ में डोंगरगढ़ के चंद्रगिरी जैन मंदिर में उनके दर्शन करने जाना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात थी। तब मुझे जरा भी इस बात का अंदाजा नहीं था कि आचार्य जी से मेरी यह आखिरी मुलाकात होगी। वह पल मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया है। इस दौरान उन्होंने काफी देर तक मुझसे बातें कीं। उन्होंने पितातुल्य भाव से मेरा ख्याल रखा और देश सेवा में किए जा रहे प्रयासों के लिए मुझे आशीर्वाद भी दिया। देश के विकास और विश्व मंच पर भारत को मिल रहे सम्मान पर उन्होंने प्रसन्नता भी व्यक्त की थी। अपने कार्यों की चर्चा करते हुए वह काफी उत्साहित थे। इस दौरान उनकी सौम्य दृष्टि और दिव्य मुस्कान प्रेरित करने वाली थी। उनका आशीर्वाद आनंद से भर देने वाला था, जो हमारे अंतर्मन के साथ-साथ पूरे वातावरण में उनकी दिव्य उपस्थिति का अहसास करा रहा था। उनका जाना उस अद्‌भुत मार्गदर्शक को खोने के समान है, जिन्होंने मेरा और अनगिनत लोगों का मार्ग निरंतर प्रशस्त किया है।

भारतवर्ष की ये विशेषता रही है कि यहाँ की पावन धरती ने निरंतर ऐसी महान विभूतियों को जन्म दिया है, जिन्होंने लोगों को दिशा दिखाने के साथ-साथ समाज को भी बेहतर बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संतों और समाज सुधार की इसी महान परंपरा में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज जी का प्रमुख स्थान है। उन्होंने वर्तमान के साथ ही भविष्य के लिए भी एक नई राह दिखाई है। उनका संपूर्ण जीवन आध्यात्मिक प्रेरणा से भरा रहा। उनके जीवन का हर अध्याय, अद्भुत ज्ञान, असीम करुणा और मानवता के उत्थान के लिए अटूट प्रतिबद्धता से सुशोभित है।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराजजी सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र की

त्रिवेणी थे। उनके व्यक्तित्व की सबसे विशेष बात ये थी कि उनका सम्यक दर्शन जितना आत्मबोध के लिए था, उतना ही सशक्त उनका लोक बोध भी था। उनका सम्यक ज्ञान जितना धर्म को लेकर था, उतना ही उनका चिंतन लोक विज्ञान के लिए भी रहता था।

करुणा, सेवा और तपस्या से परिपूर्ण आचार्य जी का जीवन भगवान महावीर के आदर्शों का प्रतीक रहा, उनका जीवन, जैन धर्म की मूल भावना का सबसे बड़ा उदाहरण रहा। उन्होंने जीवन भर अपने काम और अपनी दीक्षा से इन सिद्धांतों का संरक्षण किया। हर व्यक्ति के लिए उनका प्रेम, ये बताता है कि जैन धर्म में जीवन' का महत्व क्या है। उन्होंने सत्यनिष्ठा के साथ अपनी पूरी आयु तक ये सीख दी कि विचारों, शब्दों और कर्मों की पवित्रता कितनी बड़ी होती है। उन्होंने हमेशा जीवन के सरल होने पर जोर दिया। आचार्य जी जैसे व्यक्तित्वों के कारण ही, आज पूरी दुनिया को जैन धर्म और भगवान महावीर के जीवन से जुड़ने की प्रेरणा मिलती है।

वो जैन समुदाय के साथ ही अन्य विभिन्न समुदायों के भी बड़े प्रेरणास्रोत रहे। विभिन्न पंथों, परंपराओं और क्षेत्रों के लोगों को उनका सानिध्य मिला, विशेष रूप से युवाओं में आध्यात्मिक जागृति के लिए उन्होंने अथक प्रयास किया।

शिक्षा का क्षेत्र उनके हृदय के बहुत करीब रहा है। बचपन में सामान्य विद्याधर से लेकर आचार्य विद्यासागरजी बनने तक की उनकी यात्रा ज्ञान प्राप्ति और उस ज्ञान से पूरे समाज को प्रकाशित करने की उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दिखाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा ही एक न्यायपूर्ण और प्रबुद्ध समाज का आधार है। उन्होंने लोगों को सशक्त बनाने और जीवन के लक्ष्यों को पाने के लिए ज्ञान को सर्वोपरि बताया। सच्चे ज्ञान के मार्ग के रूप में स्वाध्याय और आत्म-जागरूकता के महत्त्व पर उनका विशेष जोर था। इसके साथ ही उन्होंने अपने अनुयायियों से निरंतर सीखने और आध्यात्मिक विकास के लिएनिरंतर प्रयास करने का भी आग्रह किया था।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज की इच्छा थी कि हमारे युवाओं को ऐसी शिक्षा मिले, जो हमारे सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित हो। वह अक्सर कहा करते थे कि चूंकि हम अपने अतीत के ज्ञान से दूर हो गए हैं, इसलिए वर्तमान में हम अनेक बड़ी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। अतीत के ज्ञान में वो आज की अनेक चुनौतियों का समाधान देखते थे। जैसे जल संकट को लेकर वो भारत के प्राचीन ज्ञान से अनेक समाधान सुझाते थे। उनका यह भी विश्वास था कि शिक्षा वही है, जो स्किल डवलपमेंट और इनोवेशन पर अपना ध्यान केंद्रित करे।

आचार्यजी ने कैदियों की भलाई के लिए भी विभिन्न जेलों में काफी कार्य किया था। कितने ही कैदियों ने आचार्य जी के सहयोग से हथकरघा का प्रशिक्षण लिया। कैदियों में उनका इतना सम्मान था कि कई कैदी रिहाई के बाद अपने परिवार से भी पहले आचार्य विद्यासागर जी से मिलने जाते थे।

संत शिरोमणि आचार्य जी को भारत देश की भाषायी विविधता पर बहुत गर्व था। इसलिए वह हमेशा युवाओं को स्थानीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने स्वयं भी संस्कृत, प्राकृत और हिंदी में कई सारी रचनाएँ की हैं। एक संत के रूप में वे शिखर तक पहुँचने के बाद भी जिस प्रकार जमीन से जुड़े रहे, ये उनकी महान रचना मूक माटी' में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। इतना ही नहीं, वे अपने कार्यों से वंचितों की आवाज भी बने।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी महाराज जी के योगदान से स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन हुए हैं। उन्होंने उन क्षेत्रों में विशेष प्रयास किया, जहाँ उन्हें ज्यादा कमी दिखाई पड़ी। स्वास्थ्य को लेकर

उनका दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य को आध्यात्मिक चेतना के साथ जोड़ने पर बल दिया, ताकि लोग शारीरिक और मानसिक रूप,दोनों से स्वस्थ रह सकें।

मैं विशेष रूप से आने वाली पीढ़ियों से यह आग्रह करूँगा कि वे राष्ट्र निर्माण के प्रति संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की प्रतिबद्धता के बारे में व्यापक अध्ययन करें। वे हमेशा लोगों से किसी भी पक्षपातपूर्ण विचार से ऊपर उठकर राष्ट्रीय हित पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया करते थे। वे मतदान के प्रबल समर्थकों में से एक थे और मानते थे कि यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने हमेशा स्वस्थ और स्वच्छ राजनीति की पैरवी की। उनका कहना था- लोकनीति लोभसंग्रह नहीं, बल्कि लोकसंग्रह है।', इसलिए नीतियों का निर्माण निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए।

आचार्यजी का गहरा विश्वास था कि एक सशक्तक्त राष्ट्र का निर्माण उसके नागरिकों के कर्तव्य भाव के साथ ही अपने परिवार, अपने समाज और देश के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की नींव पर होता है। उन्होंने लोगों को सदैव ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। ये गुण एक न्यायपूर्ण, करुणामयी और समृद्ध समाज के लिए आवश्यक हैं। आज जब हम विकसित भारत के निर्माण की दिशा में लगातार काम कर रहे हैं कर्तव्यों की भावना और ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसे कालखंड में जब दुनियाभर में पर्यावरण पर कई तरह के संकट मंडरा रहे हैं, तब संत शिरोमणि आचार्य जी का मार्गदर्शन हमारे बहुत काम आने वाला है। उन्होंने एक ऐसी जीवनशैली अपनाने का आव्हान किया, जो प्रकृति को होने वाले नुकसान को कम करने में सहायक हो। 'यही तो मिशन लाइफ' है जिसका आव्हान आज भारत ने वैश्विक मंच पर किया है। इसी तरह उन्होंने हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि को सर्वोच्च महत्त्व दिया। उन्होंने कृषि में आधुनिक टेक्नोलॉजी अपनाने पर भी बल दिया। मुझे विश्वास है कि वो नमो ड्रोन दीदी अभियान की सफलता से बहुत खुश होते।

संत शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराजजी, देशवासियों के हृदय और मन-मस्तिष्क में सदैव जीवंत रहेंगे। आचार्य जी के संदेश उन्हें सदैव प्रेरित और आलोकित करते रहेंगे। उनकी अविस्मरणीय स्मृति का सम्मान करते हुए हम उनके मूल्यों को मूर्त रूप देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह ना सिर्फ उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि होगी, बल्कि उनके बताए रास्ते पर चलकर राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होगा। ●

जीवदया व गौपालन के लिए

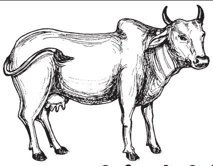

श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान

उज्ज्वल गौपालन सस्ंथा

नवकार तीर्थ, लोणीकंद की यह गोशाला आप सभी दानवीर के सहयोग से गोवंश का अभय दान बन गयी हैं । आपके परिवार की हर खुशी में एंव विभिन्न प्रसंग पर रु. १००१/- देकर एक गोवंश को अभय दान दे। या रु. ५१००१/- देकर २१ साल की गोशाला की मिती लेकर जीवदया के इस महायज्ञ में सहयोग देकर मनःशांती पाईए।

नवकार तीर्थ, पुणे - नगर रोड, लोणीकंद, जि. पुणे.
फोन : २७०६९६९०, ९८२२९५७७८८
पुणे ऑफिस : दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी रोड, पुणे ३७. **फोन** : ६५२५७७०५, **मो.**:९८५०७१४१६४
www.jainnavkartirth.goshala.org

संस्था को दिए गए दान पर आयकर कानून कलम ८० जी के अंतर्गत इन्कमटॅक्स की छूट मिलेगी

कव्हर तपशील - मार्च २०२४

❖ **श्री हस्तिनापुर तीर्थ**

श्री आदिनाथ भगवान वर्षीतप पारणा व १२ कल्याणक भूमी श्री हस्तिनापुर तीर्थचा लेख प्रसिद्ध केला आहे. (लेख पान नं. १५)

❖ **गच्छाधिपती आचार्य दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा.**

गच्छाधिपती आचार्य दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा. यांचे १८ फेब्रुवारी २०२४ रोजी पुणे येथे समाधिपूर्वक कालधर्म झाले. (लेख पान नं. १९)

❖ **आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा.**

आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा. यांचे १८ फेब्रुवारी २०२४ रोजी छत्तीसगड येथील डोंगरगड मधील चंद्रगिरी तीर्थ येथे संल्लेखना व्रतात समाधीमरण लाभले. (लेख पान नं. २१)

❖ **श्री. कांतिलालजी ओसवाल, पुणे**

पुणे येथील उद्योजक व युवा कार्यकर्ते श्री. कांतिलालजी हस्तीमलजी ओसवाल यांची जीतो अपैक्सचे प्रेसिडेंट म्हणून निवड करण्यात आली. (लेख पान नं. ३१)

❖ **श्री. विशालजी चोरडिया – सुहाना ग्रुप**

पुणे येथील सुहान ग्रुपचे श्री. विशालजी राजकुमारजी चोरडिया यांना लोकमत तर्फे महाराष्ट्रीयन ऑफ द इयर पुरस्कार मिळाला आहे. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **सुहाना स्पाइसेस् वेअर हाऊस**

यवत, पुणे येथील सुहाना स्पाइसेस् वेअर हाऊस यांना इंडियन ग्रीन बिल्डींग काऊंसिल (IGBC) सर्टिफीकेशन देण्यात आले. सुहाना ग्रुपचे श्री. आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया यांनी पुरस्कार स्विकारला (बातमी पान नं. ८५)

❖ **सुर्यदत्ता ग्रुप – पुरस्कार वितरण**

पुणे येथील सुर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशनच्या वर्धापन दिनानिमित्त सुर्यदत्त जीवन गौरव पुरस्कार व सुर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार वितरण समारंभ भव्य कार्यक्रम बावधान कॅप्स येथे संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ६४)

❖ **डायग्नोपिन – सुरभी हॉस्पिटल, अहमदनगर**

अहमदनगर येथील सुरभी हॉस्पिटल मध्ये डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक सेंटर तर्फे MRI Scan व CT Scan या मशिन बसविण्यात आले आहे. अहमदनगरचे आयुक्त यांच्या हस्ते नुकतेच उद्घाटन झाले. (बातमी पान नं. ८७)

❖ **श्री. गिरीशजी पारख – पुरस्कार**

लोणावळा येथील प्रसिद्ध नवरत्न चिक्कीचे संचालक श्री. गिरीशजी धनराजजी पारख यांना समाजभूषण पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ८८) •

श्री गौतम लब्धि (निधि) कलश

प्रेरणा : उपाध्याय **प. पू. श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा.**

गौतम निधि मार्फत गरजू साधार्मिक बांधवाना शैक्षणिक, वैद्यकीय सेवा व विकास कार्यासाठी मदत केली जाते.

संपर्क : गौतम लब्धि फाऊंडेशन, पुणे

मोबा.: ९८२२२८८५३८, ९८२२०७८६५७